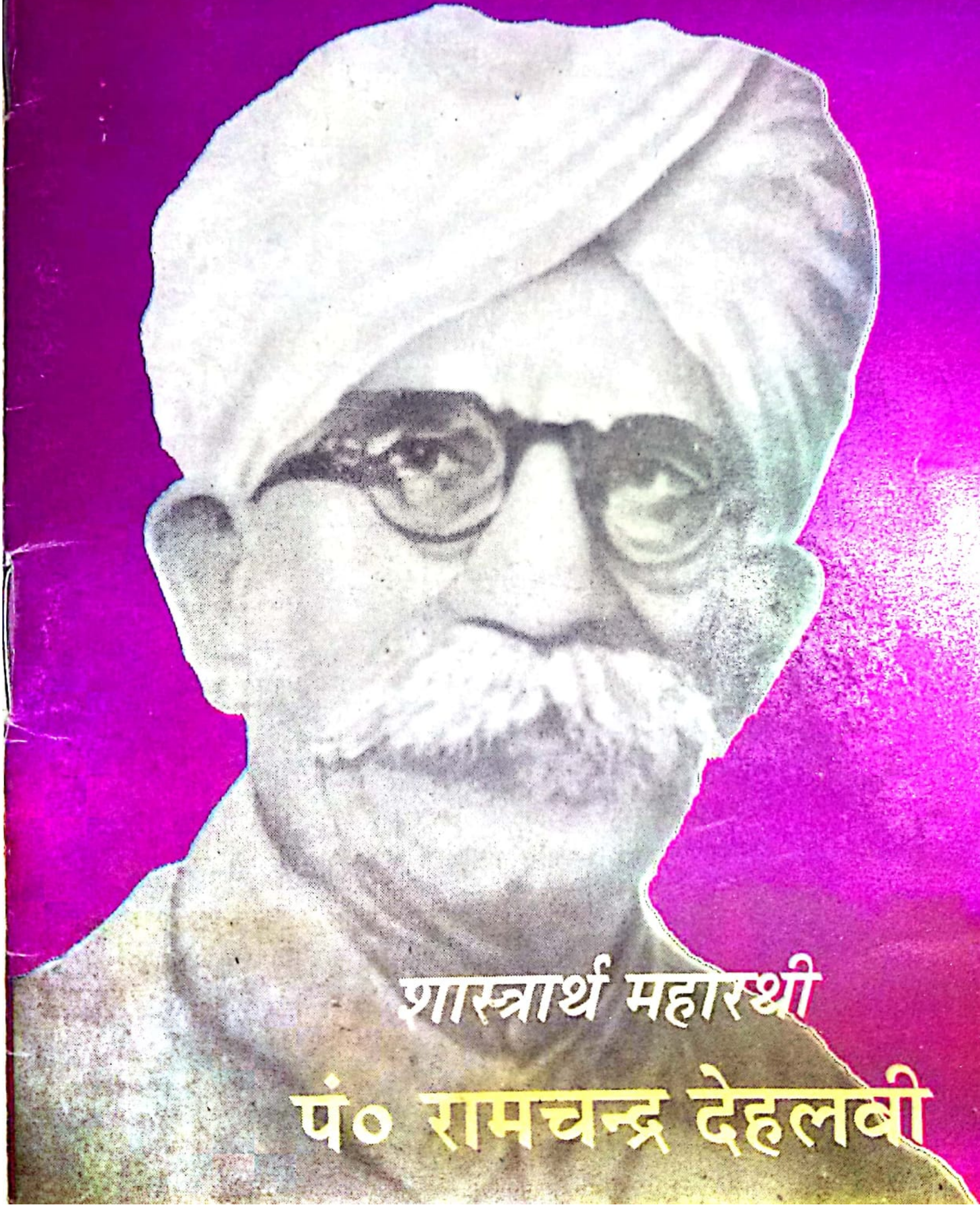
शंका समाधान



शास्त्रार्थ महारथी

पं० रामचन्द्र देहलवी

शंका समाधान

शास्त्रार्थ महारथी

पं० रामचन्द्र देहलवी

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

प्रकाशक : **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**
4408, नई सड़क, दिल्ली–110 006
दूरभाष : 23977216, 65360255
e-mail : ajayarya16@gmail.com
Website : www.vedicbooks.com

वैदिक-ज्ञान-प्रकाश का गरिमापूर्ण 91वाँ वर्ष (1925–2016)

संस्करण : 2016

मूल्य : ₹ 8.00

मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स, दिल्ली–110 032

SHANKA SAMADHAN *by* Pt. Ramchandra Dehlvi

शंका समाधान

ओ३म् दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापति अश्रद्धामनृते दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ॥ ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

परमात्मा दोनों रूप देखकर, सच और झूठ के दोनों रूप देखकर **दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्** जुदा कर देता है **सत्यानृते प्रजापतिः** सत्य से अनृत को जो प्रजापति परमात्मा है। वेद में भगवान् ने सचाई को और सचाई से बख़िलाफ़ जो चीज़ है, उन दोनों रूपों को जानते हुए जुदा-जुदा कर दिया है।

फिर आगे क्या हुक्म दिया है **अश्रद्धामनृते दधात्** अश्रद्धा से अनृत में दाख़िल किया है कि अगर तुम्हें श्रद्धा की स्थापना करनी है तो सचाई में करना, ग़लत में न करना, **अश्रद्धामनृते दधात्** अश्रद्धा को अनृत में रखा माने Unright जो ग़लत चीज़ है उसमें और श्रद्धा को **सत्ये प्रजापति,** प्रजापति ने सच में धारण किया। यह मंत्र मैंने इसलिए पढ़ा है कि वेद की क्या आज्ञा है, भगवान् ने क्या कहा है तमाम इन्सानों को कि तुम्हें यह करना चाहिए कि जहाँ सचाई नज़र आए वहाँ तुम्हारी श्रद्धा होनी चाहिए और जहाँ सचाई नहीं है वहाँ अश्रद्धा होनी चाहिए। मैंने भी वेद में यही किया हुआ है। इस वास्ते इस नियम के अनुसार ही इस वक़्त शंका का समाधान है। आप सुनें और ध्यान से सुनकर उसको ग्रहण करें।

प्रश्न 1 : *कहते हैं कि दुर्बल व्यक्ति को आत्म-दर्शन नहीं हो सकता। क्या यह सत्य है?*

उत्तर : बिल्कुल ठीक है। दुर्बल पुरुष को अपने शरीर का ही पूर्ण दर्शन नहीं होता है तो आत्म-दर्शन कहाँ होगा। अपने आत्मा के दर्शन करने के लिए तो बड़ी योग्यता की आवश्यकता है क्योंकि लाखों आदमी शरीर से बड़े बलवान् होते हुए भी यह नहीं जानते कि हम क्या हैं? उन्होंने समझा हुआ है कि हम तो जितने भूत हैं—अग्नि, पानी वग़ैरा उसके Compound हैं। तो जो दुर्बलेन्द्रिय है कमज़ोर आदमी, वह किस प्रकार से यह कोशिश कर सकता है कि मैं क्या हूँ? मेरा आत्मा क्या है? उसको जान नहीं सकता है। इसलिए जो कुछ लिखा है, वह ठीक लिखा हुआ है।

प्रश्न 2 : *वे लोग जो मूर्तियों के सामने लगातार 1-2 घंटे सन्ध्या-वन्दन में लगे रहकर जो लाभ करते हैं क्या वैसा ही लाभ उस प्राणी को मिल सकता है जो अपने मन में दिन-रात, उठते-बैठते, काम-धन्धा करते हुए अपने मन को प्रभु-चरणों में लगाए रखे, हर हाल में उसी में लगा रहने का प्रयत्न करे?*

उत्तर : कभी भी तबियत में यह ख़याल न रखिए कि जो आदमी कई घंटे उपासना कर रहा है, जिसका नाम उसने उपासना रखा है वह ज़रूर अपने अन्दर परमात्मा के गुणों को धारण कर रहा है। यह ख़याल आप तबियत से हटा दीजिए। कई घंटे बैठना इस बात की दलील नहीं है कि वह सच्चा उपासक है। सच्चे उपासक की निशानी यह है कि उसके बर्ताव में, उसके व्यवहार में परमात्मा के जैसा व्यवहार नज़र आना चाहिए। न उसके अन्दर राग हो न द्वेष हो, सब की भलाई हो, इत्यादि परमात्मा के गुणों का अक्स उसके अन्दर आना चाहिए। चाहे कोई आदमी ठीक ढंग से परमात्मा की उपासना करता है या कोई दूसरा आदमी दिनभर बैठा परमात्मा का नाम-स्मरण करता है।

(नाम-स्मरण के सम्बन्ध में मैं व्याख्यान दे चुका हूँ) परन्तु इतना कहना चाहता हूँ कि जो आदमी जिस प्रकार से भी भगवान् की उपासना कर रहा है क्या उसके अन्दर ईश्वर के गुणों की, ईश्वर के कर्मों की कोई झलक है ? अगर है तो ख़ुदा के साथ, ईश्वर के साथ जो सोहबत उसने की है और जो उसके साथ मिला है, उसने हासिल किया है तो उपासना का कोई फल है वर्ना कोई फल नहीं। मैंने तो बड़े शिकारी देखे हैं आदमी, जो बड़ी-बड़ी सन्ध्या करते हैं लेकिन बड़े-बड़े दुराचारी हैं। इसलिए कोई ज़रूरी बात नहीं। उसकी ज़िन्दगी में परमात्मा के सिफ़ाते इलाहिया, ईश्वरीय गुण जो हैं ये नज़र आने चाहिए। अगर ये आते हैं तो उपासना सही है वर्ना उपासना सही नहीं है।

प्रश्न 3 : *सृष्टि की उत्पत्ति के समय नौजवान उत्पन्न हुए, यह कैसे सम्भव हो सकता है ?*

उत्तर : बिल्कुल ठीक है। अभी-अभी हमारे भजनीक महाशय फर्मा रहे थे और कह रहे थे कि भाई सीधी-सी चीज़ है। यदि बच्चे पैदा करते तो उनको वे जानवर जो खूँख्वार Ferocious Animals थे खा जाते। वे अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे। और न आगे के लिए....उनका पालन कौन करता ? और अगर बूढ़े होते तो परिवार आगे कैसे चलता। इस वास्ते अक़्ल तक़ाज़ा करती है कि जवान पैदा होने चाहिए। मैं आपको आप ही के मुताल्लिक़ पूछता हूँ कि जब कभी आप कपड़ा पहिनते हैं और बहुत दिन तक धोते नहीं हैं और मैल यानी माद्दा इकट्ठा कर देते हैं भगवान् उसमें जीव का प्रवेश करता है। जूँ हो जाती है। क्या आप बाज़ार से खरीद कर लाए थे ? जूँ कैसे पड़ गई ? और वो जूँएँ ऐसी हैं कि फिर अंडे देती हैं। पहली तो वे हैं जो जवान हैं। जवान का मतलब अपनी रक्षा आप करती हैं। आपको वह खूब डाँटती हैं और बताती हैं कि हम आ गई हैं और बाक़ी फिर आगे। आगे लीक बन जाती

हैं। वे क्या हैं ? वे उनके अंडे हैं। आगे बढ़ती चली जाती हैं। परमात्मा कहता है कि नौ महीने में तो आप यह नज़ारा देखते हैं लेकिन जब दुबारा पैदा हो तो उस वक़्त जवान मर्द औरत पैदा होना कोई असम्भव बात नहीं है। अक़्ल के मुताबिक़ भी है और ज़रूरत भी है। इसलिए ज़रूरत और अक़्ल के साथ मुताबिक़त ने यह साबित कर दिया कि सृष्टि की आदि में जवान-जवान पैदा होने चाहिए। अपने यहाँ ही नहीं, ईसाई और मुसलमानों के यहाँ भी यही चीज़ है कि ख़ुदा ने आदम को पैदा किया। कहीं मुझसे बातचीत हो रही थी तो कहने लगे कि पंडित जी, जवान कहाँ से साबित होता है ? मैंने कहा कि उसकी बीवी को साथ पैदा किया कि नहीं ? "हाँ, पैदा तो किया।" तो मैंने कहा कि बीवी जवान की होती है या बच्चे की होती है। तो कहने लगे कि जवान की होती है। 'आदम को जवान पैदा किया' लिखा ही हुआ है।

प्रश्न 4 : *जबकि संसार में केवल वैदिक धर्म ही था, अन्य मत-मतान्तर किस प्रकार पैदा हुए और उनकी क्या आवश्यकता समझी गई ?*

उत्तर : इस तरह हुए जैसे स्कूल में लड़के अपना सबक़ याद नहीं करें तो न करने से उनकी योग्यता बिगड़ जाती है। कोई कम जानता है, कोई ज़्यादा जानता है। कोई उल्टा जाता है तो कोई सीधा जाता है। इसलिए वेद की तालीम में प्रमाद हुआ। लोग आलसी हुए। पढ़ना बन्द कर दिया। अमल करना बन्द कर दिया। तो अमल के न होने से भिन्न-भिन्न सूरतें बन गईं। यह काम हुआ वर्ना वैदिक धर्म शुरू से था ही। इसमें कोई शंका की बात ही नहीं। इसलिए प्रमाद से ही अब भी ऐसी ही हालत हो रही है। जितना-जितना प्रमाद करेंगे उतनी-उतनी सूरतें बिगड़ जाएँगी। इसलिए वैदिक धर्म शुरू में था और बाक़ी जितने और धर्म हैं वे धर्म नहीं हैं वे धर्म की बजाय अधर्म हैं या विधर्म हैं। वह धर्म नहीं।

प्रश्न 5 : *ईश्वर तक पहुँचने के लिए हरएक मत अपना रास्ता ठीक बताता है। क्या यह सब कहना ठीक है?*

उत्तर : ईश्वर तक पहुँचने का यह अर्थ न समझना कि ईश्वर ने बहुत बड़े फ़ासले पर कोई ठंडी कोठी बना रखी है और वहाँ हमें जाना है। यह मतलब नहीं परन्तु परमात्मा हमारे निकट ही है। हमारा ध्यान वहाँ नहीं है। हमें ध्यान उधर करना है। इसलिए उसका एक ही तरीक़ा है। मैं आपके सामने तरीक़ा बयान करता हूँ। क्या इससे मुख़्तलिफ़ तरीक़े हो सकते हैं? अगर कोई आदमी अपना मुँह शीशे में देखना चाहे तो क्या होगा? शीशा साफ़ होना चाहिए, आँखें सही होनी चाहिए, शीशे पर गर्द न होनी चाहिए, अन्धेरा न होना चाहिए, शीशा हिलता हुआ चंचल न होना चाहिए, इतनी चीज़ें ज़रूरी हैं। शीशे में मुँह देखने के लिए मुझे बतलाइए बादशाह के लिए और ग़रीब के लिए, अमीर के लिए क्या मुख़्तलिफ़ तरीक़े होंगे देखने के? क्या बादशाह चंचल शीशे में अपना मुँह देख सकेगा? क्या अमीर ऐसे शीशे में जिसमें गर्द पड़ी हुई है, अपना मुँह देख सकेगा, कोई नहीं देख सकेगा। इतनी चीज़ें अपनी शक़्ल शीशे में देखने के लिए ज़रूरी हैं। वह सब के लिए ज़रूरी है। कोई इससे ख़ाली नहीं है। इसलिए भगवान् सबके निकट है। निकट होने की वजह से तरीक़ा एक ही है। मुख़्तलिफ़ तरीक़ा कोई नहीं। परमात्मा एक है, जीवात्मा भी एक ही प्रकार के हैं। इसलिए उनके लिए मुख़्तलिफ़ तरीक़े नहीं हैं। एक ही तरीक़े से भगवान् की प्राप्ति है। प्राप्ति तो है ही और प्राप्ति क्या है? परमात्मा तो सबके अन्दर है। बदमाशों के अन्दर भी है लेकिन ध्यान नहीं है। इसकी ज़रा एक मिसाल दे दूँ तो समझ में आ जाए। आपका मकान है और खिड़कियाँ आपने बन्द की हुई हैं। सूरज निकल आया है। किरणें आ रही हैं लेकिन आपने खिड़की बन्द की हुई है। इसलिए सूरज ने कोई भी गड़बड़ पैदा नहीं की है। उसने अपने आपको रोका

नहीं है बल्कि आपने रोका हुआ है। खिड़की ज़रा खोल दीजिए। सूर्य की किरणें अन्दर मौजूद हैं। इसी तरह जीवात्मा के अन्दर परमात्मा विराजमान है। जीवात्मा बाह्यवृत्ति हो रहा है। बाहर देख रहा है। अपने से बाहर देख रहा है। बाहर प्रकृति है। इसलिए Introspection से अगर अन्दर देखना है तो भगवान् विराजमान हैं। दूर जाने की ज़रूरत नहीं। एक ही तरीक़ा है और वह सब के लिए एक है। संक्षेप में यही है।

प्रश्न 6 : *जन्त्री में जो विवाह के शुभ मुहूर्त दिए होते हैं उसके अनुसार विवाह होना उचित है (अस्पष्ट)..... ?*

उत्तर : नहीं, मैं तो बहुत ज़्यादा उसके मुआफ़िक़ नहीं हूँ। अक़्ल कहती भी है क्या होना चाहिए। दिन अच्छे हों, उसका अर्थ क्या है? चाँदनी रात हो ताकि तेल वग़ैरा का खर्च न हो। लोगों की सेवा करने में कष्ट न हो। दूसरे घर के आदमी बीमार न हों, तन्दुरुस्त हों, इत्यादि। इन बातों को मद्देनज़र रखकर ही तारीख़ शादी वग़ैरा की रखनी चाहिए और उसमें अगर आप रखेंगे तो सुखी रहेंगे और बख़िलाफ़ रखेंगे तो सुखी नहीं रहेंगे। इसको पुण्य नक्षत्र कहा है। पुण्य नक्षत्र के माने यह हैं कि देखो घर में सब आनन्द हैं। कहीं गड़बड़ तो नहीं है। लेकिन फ़र्ज कीजिए, कोई ऐसी तारीख बता दी उस पत्रे ने या जन्त्री ने कि जिसमें घर के लोग बीमार हैं और तकलीफ में हैं और आप मजबूर होकर करने लगे हैं तो एक दुःखमय चीज़ होगी। उसमें सुख ज़रा भी न होगा। यह सोच-विचार कर हमें काम करना चाहिए और जितने भी अंग्रेज़ लोग शादी करते हैं, मुसलमान लोग भी शादी करते हैं तो क्या वे पत्र व जन्तरी को देखते हैं या पत्री को देखते हैं? नहीं न। उनके यहाँ शादी नहीं होती या बच्चे नहीं होते? उनके यहाँ भी होते हैं। हमने खामख़्वाँ यह झंझट अपनी जान को लगा रखा है। इसलिए कहते हैं कि जब घर में आनन्द हो और फ़ुर्सत हो और दिन अच्छे हों, 'दिन अच्छे

हों'—मतलब क्या जो मैंने आप से अर्ज़ किया है इस तरह पर अगर चीज़ हो तो आप उसमें शादी-विवाह कर सकते हैं। ये ज़्यादा-से-ज़्यादा अक़्लमंदी की बात है।

प्रश्न 7 : *संसार में सबसे पहला नौजवान कौन पैदा हुआ था ?*

उत्तर : नौजवान! सबसे पहला नौजवान कौन पैदा हुआ था, यह क्या सवाल है ?

यानी एक घोड़ा पैदा हुआ बहुत-से हुए....**ततो मनुष्या अजायन्त** जैसे रात को सोकर सुबह कितने आदमी उठते हैं। समझ लेना चाहिए, रात प्रलय है और सुबह का वक़्त क्या है ? सुबह का वक़्त सृष्टि है। क्या वहाँ नाम रखा गया था किसी की तरफ़ से किसी का ? जिसने रखा होगा वह जानते होंगे। मैं तो यहीं पूछ लूँ कि अगर यहाँ बच्चा पैदा हुआ है कहीं उसका नाम क्या है आप सबको मालूम है ? यह सवाल ही कुछ अक़्लमंदी का नहीं है। इतना ही कह सकते हैं कि सृष्टि की आदि में बहुत से नौजवान पैदा हुए थे। एक नहीं हुआ और उन्होंने पैदा होने के बाद वेद से यह जाना कि इम्तियाज़ के लिए, पहचान के लिए नाम रखना चाहिए। इसलिए बाद में उन्होंने नाम रखे। नाम हमेशा बाद में रखे जाते हैं और वे पहचान के लिए रखे जाते हैं। इस वास्ते वे बाद में रखे गए और जो नाम रखे होंगे उन नामों से उनको पुकारते होंगे और पहचानते होंगे। यहाँ पूछना कि कौन नाम रखा था यह एक फ़िज़ूल-सा सवाल है।

प्रश्न 8 : *आप कहते हैं कि जिसके अन्दर कोई शक्ति हो और उसका उपयोग न करे यह चीज़ न होने के बराबर है। हमारे शरीर में वीर्य है। महात्मा विद्वान् कहते हैं कि हमारा ब्रह्मचारी रहना अच्छा है तो फिर इस वीर्य का क्या लाभ यदि हम सन्तानादि पैदा न करें ?*

उत्तर : ठीक—शायद उनको एक ही लाभ मालूम है वीर्य का.... वीर्य नीचे को गिरता है तो क्या करता है और ऊपर को चढ़ता है तो

क्या करता है ? इन्हें ऊपर की ख़बर नहीं वह क्या है ऊर्ध्व+एता यानी जिन्होंने ब्रह्मचर्य रखा है Life of Contenance lead की है ब्रह्मचारी रहे हैं और जिन्होंने अपने आपको निरोध किया है, रोका है कन्ट्रोल किया हुआ है। कहते हैं, वह वीर्य ऊपर चढ़ेगा और ऊपर चढ़के दिमाग़ के पुट्ठे बनाएगा और दिमाग़ इतना चेतन हो जाएगा कि कोई भी विषय उनके सामने आवे—ऋषि लिखते हैं, मैं उन्हीं के लफ़्ज़ों में कहता हूँ कि बारीक से बारीक विषय को अच्छे प्रकार से समझ सकेंगे, कोई चीज़ उलझन की न रहेगी, दिमाग़ रौशन हो जाएगा। जब ऐसी चीज़ हो जाएगी तो ऊपर चढ़ने से यह फ़ायदा होगा और अगर सन्तान भी कोई पैदा करे तो पाप नहीं है। अगर गृहस्थी है, बाक़ायदा पैदा करे। हद से ज़्यादा न पैदा करे क्योंकि ताक़त कम है, साधन कम हैं। कमा नहीं सकता, खिला नहीं सकता तो जितनों को खिला-पिला सकता है, जितनों का पोषण कर सकता है उतने ही पैदा करने चाहिए। उससे ज़्यादा नहीं। और जिनके यहाँ ज़्यादा हैं, वे दुःखी होते हैं। इस वास्ते बतलाया वीर्य का इस तरह प्रयोग सन्तान पैदा करता है और अगर ब्रह्मचारी रहे तो ऊपर ऊर्ध्वरिता हो जाता है और वह ऊपर चढ़ा हुआ आदमी के दिमाग़ के पुट्ठों को और उसके अन्दर जो योग्यता है बात समझने की उसमें इज़ाफ़ा व वृद्धि करता है। इस वास्ते उन्होंने एक ही चीज़ समझी थी इसलिए सवाल कर दिया। दो काम हैं उसके।

प्रश्न 9 : *भगवान् की यह विशेषता है कि उसकी बनाई हुई चीज़ बढ़ती जाती है और जैसे आपने सब्ज़ी का उदाहरण दिया था तो ऐसे सूर्य, पृथ्वी और चाँद के लिए भी.....*

उत्तर : कितनी भूल है! ज़रा विचार करो। हमारे प्रयोग में आने वाली जो चीज़ें ख़त्म हो जाती हैं खाने में, पीने में वग़ैरा। उड़द है, दाल है, चावल है। इन चीज़ों का ज़िक्र है कि यह भगवान् ने पैदा

की हैं और हमको फिर चाहिए। ये जब ख़त्म हो जाती हैं तो इनको बो दीजिए। फिर निकल आएँगी, फिर बो दीजिए फिर निकल आएँगी। ज़िक्र तो इस चीज़ का है यदि वह सूरज और चाँद भी कहते हैं तो मैं उन्हें जवाब देता हूँ। जो चीज़ जितने वक़्त तक ठहरती है तब तक तो आप उसका इस्तेमाल करते हैं। लेकिन जब उसकी मौसम आती है तब बो देते हैं। तो सूर्य और चन्द्रमा की मौसम कब आएगी? तब आएगी जब प्रलय हो जाएगी और प्रलय होने के अन्दर जब सूर्य, चन्द्रमा नहीं रहेंगे वे फिर बो दिए जाएँगे तो दुबारा सृष्टि पैदा होगी तो फिर सूर्य, चन्द्रमा पैदा हो जाएँगे। फ़ासला जो है वह बराबर लगा चीज़ के साथ लगा रहेगा वक़्त का। आप यह सवाल पूछिए तो इसका भी उत्तर यह है। परन्तु मतलब वहाँ यह था कि जो चीज़ें आपके प्रयोग में आती हैं और खतम हो जाती हैं, जिनको आप सर्फ़ करते हैं, इस्तेमाल में लाते हैं, अगर उन्हें बो दें तो वैसी ही फिर पैदा हो जाएँगी लेकिन आप अपनी रोज़ की चीज़ें ही। मैंने बाइसिकल की मिसाल दी। जूते की मिसाल देता हूँ। धोती की मिसाल देता हूँ। यह आप भी प्रयोग में लाते हैं। धोती को बो दीजिए। जूतों को बो दीजिए। फिर निकलते हैं क्या? सड़ जाएँगे, गल जाएँगे। नहीं होता है। यह भगवान् की बनाई हुई चीज़ में होता है। आपकी बनाई हुई चीज़ में कसर है।

प्रश्न 10 : *ईश्वर की क्या आवश्यकता है?*

उत्तर : ईश्वर की क्या आवश्यकता है? मैं इन्हीं से पूछता हूँ, यहाँ जितने सवाल करने वाले बैठे हैं। यहाँ तशरीफ़ रखते हैं सवाल करने वाले या नहीं? ख़ैर (शायद बोल के चले गए होंगे) जो बाप की आवश्यकता है बच्चों के पालन करने में वह परमात्मा की आवश्यकता है। बस समझ लीजिए बिल्कुल अगर कुछ पूछना हो तो फिर पूछ सकते हैं। (चलिए)

प्रश्न 11 : *सृष्टि की कैसी उत्पत्ति होती है और कहाँ से आरम्भ होती है?*

उत्तर : देखो शुरू के माने समझने की ज़रूरत है प्यारे भाइयो! एक तो शुरू होता है हरएक सृष्टि का जिसके माने ये हर दिन का शुरू समझ लीजिए। हर दिन का शुरू कैसे होता है एक तो यह बात है और एक यह कि सृष्टि सबसे पहले कब बनी, दो सवाल हैं। सबसे पहली सृष्टि हमारे यहाँ कोई नहीं। क्यों नहीं? कि अगर किसी ख़ास ज़माने में परमात्मा ने दुनिया को बनाना शुरू किया हो तब तो पहली सृष्टि हो सकती है। लेकिन, जहाँ प्रवाह चल रहा है, जहाँ सिलसिला चल रहा है वहाँ क्या जवाब है? कि हर रात दो दिन के बीच में है, और हर दिन दो रात के बीच में। हमारी यह रात गुज़रे हुए दिन व आने वाले दिन के बीच में है और हमारा गया हुआ दिन आज की यह रात और इससे पहले जो रात है उसके बीच में है। तो हर दिन दो रात के बीच में और हर रात दो दिन के बीच में है। सिलसिले के लिहाज़ से पहला दिन और पहली रात कोई नहीं लेकिन अगर ये पूछें कि जब कभी दिन निकलता है तो शुरू में क्या बात होती है तो इसका जवाब यह होगा कि जब दुनिया बनती है तो सबसे पहले माद्दी चीज़ें जो प्राकृतिक चीज़ें हैं वे बनती हैं। पहाड़ हैं, नदी वग़ैरा हैं। ये सब चीज़ें बन जाती हैं। उसके बाद जाकर सबसे पीछे मनुष्य बनता है तो प्राकृतिक वस्तुएँ बनने के बाद जीवात्मा का प्रवेश माद्दी चीज़ों में होता है और वे शरीर जो जीवात्मा-युक्त होते हैं, अपना काम भगवान् के नियमानुसार करते चले आते हैं। सबसे पीछे मनुष्य की उत्पत्ति होती है। ये तरीक़ा है। काहे का? दुनिया के पैदा होने का। दिन के पैदा होने का क्या तरीक़ा है? जब प्रातःकाल होता है तो लोग सुबह ही उठते हैं। कोई भगवान् का नाम लेता है, कोई कुछ करता है, कोई ऐसा भी है जो हुक़्क़ा भरता है, चिलम पीता है, पाख़ाने जाता है, कोई चारपाई उठाता है, कोई शौच

जाता है, कोई नहाता है, कोई धोता है। हर रोज़ होता है कि नहीं ऐसा ही। हर सुबह ऐसा ही होता है कि नहीं कि हाँ ऐसा ही होता है। हर दुनिया में यह बात होती है कि जब परमात्मा जगत् में उत्पन्न करता है तो दुनिया के शुरू में तमाम प्राकृतिक चीज़ें बनने के बाद सबसे पीछे मनुष्य की उत्पत्ति होती है और फिर सिलसिला दुनिया में बराबर चलता चला जाता है। रात को किससे मिलाइए? रात को प्रलय से मिलाइए और दिन को सृष्टि से मिलाइए। समझाने के लिए यह चीज़ है। अगर वक़्त बचेगा तो मैं और वसाहत के साथ इसको समझा दूँगा। (चलिए)

प्रश्न 12 : *स्वर्ग और नरक क्या हैं? और कहाँ हैं?*

उत्तर : स्वर्ग और नरक अवस्थाएँ हैं। यह जानते हैं। यह कोई मुक़ाम नहीं है। मैंने ईसाइयों से भी पूछा था तो उन्होंने भी यही जवाब दिया। क्यों? आर्यसमाज की बात बड़ी प्रबल है, माननी पड़ती है। उन्होंने जवाब दिया These are rather states than places. ये अवस्था के नाम हैं, जगह के नाम नहीं हैं और क़ुर्आन वालों ने भी। मैं शिमले में बहस कर रहा था तो इल्लीन और सिद्दीन ने कहा, पण्डित जी, ये मुक़ामात नहीं हैं। ये अवस्था के नाम हैं। वहाँ तो साफ़ लिखा है कि **इन्नल मुत्तक़ीन**....मुत्तक़ी लोग जो हैं वहाँ तो मुक़ाम लिखा हुआ है। आप क्या कहते हैं? अजी कहने लगे कि मुक़ाम तो कहीं-न-कहीं होता ही है। जहाँ हालत होती है वहाँ मुक़ाम भी होता ही है। मैंने कहा—ठीक है।

प्रश्न 13 : *क्या स्त्रियों को भी यज्ञोपवीत (जनेऊ) लेना चाहिए?*

उत्तर : ब्रह्मचर्येण कन्या युवानां विन्दते पतिं स्वामी जी महाराज प्रमाण देते हैं। आत्माराम जो पंडित थे, दिल्ली के अन्दर सनातनधर्मी पण्डित थे। उन्होंने अपनी लड़की का जनेऊ संस्कार

किया और चैलेंज किया तमाम पण्डितों को, सनातनधर्मियों को कि आएँ और बतलाएँ कि इसका यज्ञोपवीत क्यों न होना चाहिए। इसलिए होना ही चाहिए जनेऊ तीन तागे उनके तीन तागे उनके बराबर होने चाहिए। सिर्फ़ थोड़ा जिस्मानी फ़र्क़ है बाक़ी तरक़्क़ी करने के लिए तो जैसा हक़ मर्द का है वैसा ही औरत का है। दोनों के लिए एक ही हक़ है। उसको उस हक़ से महरूम करना ठीक नहीं।

प्रश्न 14 : *सच्चा गुरु कौन है? आजकल की देवियाँ आनन्दपुरियों को और निरंकारियों को गुरु बनाती हैं। क्या यह धर्म के अनुसार ठीक है?*

उत्तर : बिल्कुल नहीं। धर्म के विरुद्ध है। ऐसा गुरु उनको हर्गिज़-हर्गिज़ नहीं बनाना चाहिए। उन देवियों को जो-कुछ सीखना है अपने मर्दों के ज़रिये, विद्वान् लोगों से सीखें। आनन्दपुरिये वग़ैरा जितने भी हैं यह सारा पाखण्ड है जिसका मैंने ज़िक्र किया था। तो इस तरह पर अपना जमाव जमा करके ये हमेशा कूदते रहते हैं और कोई ऐसी बात नहीं बतलाते जिससे उनका उद्धार हो, उनका उत्थान हो, उनकी तरक़्क़ी हो। ऐसी कोई चीज़ नहीं बतलाते हैं। लिहाज़ा गुरु और चेले वाली जो चीज़ है, यह ख़त्म कर देनी चाहिए। इनको कभी गुरु नहीं मानना चाहिए। अपने पति के ज़रिये जहाँ कुछ प्राप्त करना हो, प्राप्त करें। अकेली किसी के पास न जाएँ। किसी भी मर्द, जिसे समझते हैं यह गुरु है, हमारा आचार्य है, वहाँ बिल्कुल न जाएँ उनके ज़रिये से जाएँ और जाकर सीखें। जो भली बात है वह सीखें। अपनी अक़्ल से सीखें। यह न करें कि जो उन्होंने कह दिया आँख मींचकर मान लें। यह न होना चाहिए। मैं तफ़्सील नहीं बयान करता हूँ। लेकिन जहाँ रामनाम वाले हुए हैं उनके मुताल्लिक़ स्वामी जी ने बड़ी बात लिखी हुई है। उनको रामसनेही नहीं कहा है। स्वामी जी लिखते हैं रांडसनेही। रामसनेही—साधु होते हैं जो राम-राम, राम-राम, राम-राम

ही कहते हैं। स्वामी जी ने सत्यार्थ-प्रकाश में लिखा है, "वह रामसनेही नहीं हैं वह रांडसनेही हैं।" बिल्कुल साफ़ लिखा है। ऋषि ने खंडन किया है उनका जो ग़लत चीज़ें हैं।

प्रश्न 15 : *पण्डितों का कहना है कि महाभारत के युद्ध के समय सात ग्रह इकट्ठे हुए परन्तु अब कहते हैं कि सन् 1972 में नौ ग्रह इकट्ठे होंगे ?*

उत्तर : हो जाएँ, अगर ऐसे हो जाएँ तो हमारी ताक़त के बाहर हैं। हमारी ताक़त के बाहर है। अगर हो जाएँ तो हो जाएँ। यदि आपका यह ख़याल है कि सात सितारे इकट्ठे होने की वजह से, ग्रह एकत्रित होने की वजह से लड़ाई हुई तो तब ज़रा ज़्यादा ज़ोर की हो जाएगी। और क्या ? अगर आपका यह ख़याल है तो मैं तो मानता नहीं हूँ इस चीज़ को। लोग कहा करते हैं कि ओहो साहब, फलाना तारा डूब गया और यह डूब गया। अरे ! जब सूरज डूब जाता है तब कुछ नहीं होता, रात होती है। इसके सिवाय और क्या होता है ? इसलिए ये सब ख़याल ग़लत हैं। इन्हें मानना नहीं है। अगर नौ सितारे इकट्ठे हो जाएँगे तो हो जाएँगे। अगर हो जाएँगे, लड़ाई होगी। आपकी ताक़त से बाहर है। अगर सितारों का असर इन्सानों पर होता है तो जो-कुछ वे करते हैं उसके Responsible नहीं। ये ज़िम्मेदार नहीं। कहते हैं—क्या करें ? सितारे ऊपर आ गए हैं। इसकी वजह से हमें करना पड़ता है, मजबूर हैं। और जहाँ मजबूरी है वहाँ Responsibility यानी ज़िम्मेदारी नहीं है।

प्रश्न 16 : *हवन क्या चीज़ है ? आप इसे क्यों करते हैं ?*

उत्तर : हवन यह चीज़ है कि हम जो गन्दगी फैलाते हैं उसका निवारण करते हैं। अगर एक आदमी पाख़ाने जाता है और आबदस्त लेता है तो क्या बुरी बात है ? अगर सुबह उठता है और मुँह धोता है तो बुरी बात है ? तो जितनी गन्दगी हमारे शरीर से फैलती है हम उसके

निवारण के लिए हवन करते हैं। तो क्या बुरी बात है ? नहीं, परमात्मा इससे ख़ुश होता है यानी परमात्मा हमें अच्छा फल देता है।

प्रश्न 17 : *इन्सान का जन्म अशरफउल मख़लूक़ माना गया है। 'ठीक' इन्सान अपने बुरे कर्मों की वजह से मरने के बाद दूसरे जन्म में जाता है।*

उत्तर : इन्सान को जीवात्मा और शरीर के सहित अश्वस् कहा गया है। अशरफउल मख़लूक़ात यानी जो मख़लूक़ पैदा की हुई चीज़ है जो Creation है उसमें सबसे ऊँचे दर्जे का है, क्योंकि जो शरीर इसे मिला है उसमें नेकी और बदी की पहचान मौजूद है। इसलिए ऊँचे दर्जे का है यह। इसलिए उसको अश्वस् कहा है। अगर यह काम नीचे अदज़ल् करे तो नीची योनियों में जाता है और भी ज़्यादा बुरे करे तो कीट–पतंगा इत्यादि हो जाता है। वहाँ जाता है। वहाँ वह क़ैद है और वहाँ वह अपने स्वभाव को ज़ाहिर कर रहा है जैसा स्वभाव उसने इन्सानी जिस्म में किया था कि दूसरों को दुःख देना, तकलीफ़ देना इत्यादि तो कहते हैं उसी तरह की योनियाँ प्राप्त करता है। वहाँ ज़ाहिर करता है वह उसकी तो कहते हैं भगवान ने इन्तज़ाम किया है कि जीवात्मा मनुष्य शरीर में क्योंकि समझदार है उसकी Capricious will है। उल्टा भी जा सकता है। सीधा भी जा सकता है। पाप भी कर सकता है। पुण्य भी कर सकता है। तो कहते हैं कि यदि कोई पाप करेगा तो पाप का फल मिलेगा और पुण्य करेगा तो पुण्य का मिलेगा। लेकिन ऐसी सूरत है कि अगर पाप ज़्यादा हैं और पुण्य कम हैं तो नीच योनि में जाएगा और वह पाप जब पुण्य के बराबर हो जाएँगे तो फिर—फिर मनुष्य योनि में आ जाएगा। मिसाल के तौर पर एक आदमी बीमार हो गया तो क्या तन्दुरुस्ती के अजज़ा कम हो गए, बीमारी के बढ़ गए ? इस सूरत में हॉस्पिटल में दाख़िल किया गया। वहाँ दवा वग़ैरा देकर उसको ऐसा बना दिया कि अब उसके तन्दुरुस्ती

के और बीमारी के जो परमाणु हैं वे बराबर हो गए, साम्य हो गए, अवस्था ठीक हो गई तो डॉक्टर क्या कहता है—Now you are all right, you can go and resume your duty. जाइए अब आप duty पर चले जाइए और अपना काम कीजिए। क्योंकि आपके पाप और पुण्य बराबर हो गए। आपके लिए मौका है कि फिर आप स्वतन्त्र हैं। अब आप चाहे भला करें या बुरा करें। अब आप जाइए और काम कीजिए। हॉस्पिटल के लायक़ अब आप नहीं। तो इसी तरह इन योनियों के लायक़ आदमी नहीं रहता है। जब पाप ज़्यादा हों तो इन योनियों में जाता है। लेकिन पाप और पुण्य बराबर हो गए जैसे तीस तो मेरे पाप हैं और पन्द्रह पुण्य हैं तो पन्द्रह पुण्य हैं और तीस पाप हैं। जब पाप घटते-घटते पन्द्रह पुण्य के बराबर हो जाएँगे तब मैं मनुष्य-योनि में आ जाऊँगा। यह तरीक़ा है। उसका यही तरीक़ा स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में लिखा है।

प्रश्न 18 : *आप चोटी क्यों रखते हैं? और यज्ञोपवीत क्यों पहनते हैं?*

उत्तर : इसलिए कि चोटी जो है—हमारा धर्म ही चोटी का है। पेंदी का है क्या? धर्म ही चोटी का है, ऊँचा सबसे ऊँचा है एक बात। दूसरे यह है कि इसकी एक और फिलॉसफी है कि जो यह Spinal chord है उसकी रक्षा के लिए चोटी होनी चाहिए। यह गाय का खुर है। आपने देखा होगा मद्रासी लोगों को, महाराष्ट्र लोगों की कि बड़ी चोटी रखते हैं। इधर से मुँड़ा हुआ सिर रहता है लेकिन चोटी रखते हैं। काहे के लिए? कि अगर योग-साधन हम करें तो हमारी ओर से जो यह रक्षा किया हुआ Spinal chord है और ब्रह्मरन्ध्र है यह हमको क्या करता है? अमृत का दान कराता है। जब हम योग का साधन करते हैं तो इसलिए यह दूर की चीज़ है लेकिन जो मुख़्तसर बात है सबके पहचानने की वह यह है कि शूद्र तक की यह पहचान है चोटी,

यह कि वैदिक धर्म से यह सम्बन्ध रखने वाला है। जनेऊ से तो द्विज तक की है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तक की लेकिन आगे चोटी उस तक की है और दूसरे मैंने जो जवाब दिया कि मेरा धर्म इससे ज़ाहिर होता है कि मेरा धर्म चोटी का है। हमारा धर्म नीचे गिरने का नहीं है। तनज़्ज़ुल का नहीं है बल्कि तरक़्क़ी का है। इसका मतलब है, यह चिह्न है। हरएक कोई अपने-अपने चिह्न की रक्षा करता है।

जनेऊ काहे के लिए है? हमारे क्या कर्त्तव्य हैं? हमारे फ़रायज़ क्या हैं? उनको, फ़रायज़ को तीन धागों से परचाया गया है ताकि अगर हम, कभी न करें तो दूसरा कह सकता है कि जनेऊ पहने हुए हो, तुम्हें शर्म नहीं आती! अरे जनेऊ पहन करके अपना कर्तव्य नहीं करते हो? जब जनेऊ है तो कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। मान लीजिए कि एक पुलिसमैन है और वह अपना पट्टा नहीं रखता है तो कोई भी आदमी उसको नहीं पहचानेगा और कोई उसको उपालम्भ नहीं देगा, अगर वह ग़लत काम करता है। लेकिन अगर ग़लत काम करे और पट्टा लगा हुआ हो तो कहेगा कि पुलिसमैन होकर आप ऐसा कर रहे हैं, आपको शर्म नहीं आती है। इसी तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जो जनेऊ धारण कर रहे हैं उनका काम है कि जनेऊ के अनुकूल वह कार्य करें। अगर नहीं करते हैं तो ग़ैर को मौका मिलता है उलाहना देने का कि आप ऐसा क्यों नहीं करते हैं और उनके लिए क्या है हर वक़्त याद रखें कान पर चढ़ाने का और कुछ मतलब नहीं है सिवा इसके कि कान पर चढ़ाना। मतलब क्या कि विद्या हमने कान के द्वारा प्राप्त की है। इसलिए यह कान हमेशा यूँ बँधे रहने चाहिए कि ये इससे बाहर न निकल जाएँ। यह एक चीज़ है वर्ना आप इसे और तरह भी रख सकते हैं। रखने के लिए कोई बात नहीं। कान पर चढ़ाने का यही मतलब है। यदि आप नाक में बाँध सकते हों तो आप नाक से बाँध लीजिए। हमें एतराज़ नहीं; और क्या फ़ायदे हैं? मैंने कहा और भी फ़ायदे हैं। कान

पर चढ़ाने के लाभ ये हैं कि अगर मान लीजिए आप ऐसी जगह जा रहे हैं जहाँ आपको संकोच है और आपको लघुशंका के लिए जाना है तो जहाँ आपने पकड़कर यों निकाला और कान पर लगाना शुरू किया तो लोग पूछते हैं कि आप शौच जाएँगे, लघुशंका के लिए जाना चाहते हैं। अपने आप ही मालूम करते हैं। आपको कहने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए यूँ भी फ़ायदा है। जब आप वहाँ से आएँगे तो वे पानी लेके आएँगे हाथ धोने के लिए। लेकिन आजकल कोई धोता है, कोई धोता-धाता नहीं है। पेशाब गए, वैसे ही आ गए, कोई बात नहीं है।

यह बतलाया था ऋषि-मुनियों ने, गन्दगी को गन्दगी समझना चाहिए। इसलिए अगर ऐसे स्थान पर हाथ लगता है जहाँ धोने की ज़रूरत है तो उसके लिए यह सरल प्रकार है कि जनेऊ को कान पै टाँगो, लघुशंका करने जाओ, हाथ धोओ, फिर उसको उतार लो। पाख़ाने जाओ, फिर उसको उतार लो। इसलिए बुद्धि की बात है। इसमें कोई ऐसी चीज़ नहीं। इसलिए जनेऊ है और इसलिए चोटी है, रखनी ही चाहिए।

प्रश्न 19 : *ख़ुदा ईसा मसीह रहमदिल थे या हैं। आप इस बात का प्रमाण दीजिए कि वे रहमदिल नहीं थे?*

उत्तर : हमने कभी नहीं कहा कि रहमदिल नहीं हैं। हम तो कहते हैं कि He was a very amiable man. बहुत नेक आदमी था, बड़ा नेक आदमी था। हम तो यही कहते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि हम आर्यसमाजी हैं तो जो आदमी नेक दूसरे धर्म का है हम यही कहेंगे कि वह नेक नहीं है। नेक थे, बहुत अच्छे, लायक़ आदमी, सब बात ठीक परन्तु जो कमी की चीज़ है वह अलग। कमी की चीज़ है तो हमने कभी नहीं कहा कि रहमदिल नहीं हैं। इसलिए हम ख़ामख़ां प्रमाण दें उस चीज़ का जिसे हम मानते ही नहीं हैं। हमने दावा थोड़े ही किया है? दावे का सबूत दिया करते हैं। अगर हमने दावा किया होता कि वे

रहमदिल नहीं हैं तो सबूत देते। जब हमने दावा ही नहीं किया है तो सबूत क्यों माँगते हो आप? जो कोई कहता है (कि वे रहमदिल नहीं थे) उससे माँगिए। वे रहमदिल थे, रहमदिल तो और भी हैं और भी बहुत-से रहमदिल हैं। इसलिए आगे बतलाइए कि क्या पूछना है आगे।

प्रश्न 20 : *वैदिक धर्म कब और कैसे प्रारम्भ हुआ? वैदिक धर्म को मानने वाले किन-किन ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं और क्या मानते हैं?*

उत्तर : वैदिक धर्म वह है जो सृष्टि के शुरू में, सृष्टि के आरम्भ में ज़ाहिर हुआ। क्या मतलब उसका कि जिन फ़रायज़ का करना, जिन कर्त्तव्यों का करना जीवात्मा के लिए उन्नति करने के लिए ज़रूरी है वह परमात्मा ने वेद के ज़रिये ज़ाहिर किया। इसी का नाम वैदिक धर्म है, इसी का नाम पुराना धर्म है। इसी का नाम सनातन धर्म है। जीवात्मा की भलाई के लिए ही भगवान् ने ये वेद ज़ाहिर किए हैं और इसके अन्दर ऊँची से ऊँची तरक़्क़ी के लिए क्या उपाय होने चाहिए, क्या साधन होने चाहिए, यह वेद में वर्णित है। इसलिए इनका वर्णन करना और जीवात्मा को आज्ञा देना कि तुझे क्या करना चाहिए, यह वैदिक धर्म है।

कालन्नातुइम्मतुन् वाहिदतुन् पदातल्लाहु .... नबौईना मुबस्सिरीना मुन्ज़रीन।

क़ुर्आन में भी लिखा है। क्या लिखा है? **कालन्नातु इम्मतुन् वाहिदतुन्** लोग पहले केवल एक ही धर्म पर थे। **पदातल्लाहु नबीईना** जब लोग एक पर से हिल गए तो परमात्मा ने नबी भेजे, मुतनब्बे करने वाले वाक़िफ़ करने वाले, नबी भेजे, मुबस्सिरीन, ख़ुशख़बरी देने वाले भेजे। यह याद रखो कि अच्छा धर्म मानोगे तो अच्छा फल मिलेगा व मुन्ज़रीन डराने वाले भेजे कि अगर न मानोगे

अच्छी बात तो तुम्हारे लिए दोज़ख है। ये तीन तरह के आदमी भेजे। यह क़ुर्आन में लिखा है कि पहले सब एक ही मज़हब था, अलग-अलग कोई नहीं।

कानन्नातुइम्मतुन् वाहिदतुन् मामूली उर्दू जानने वाला भी वाहिद को समझ जाएगा कि वाहिद के माने *एक*। पहले तो एक ही धर्म था लेकिन जब लोग विचलित हो गए तो विचलित होने पर मुब्बस्सिर भेजे, मुबल्लिग़ भेजे, परमात्मा ने मुन्ज़रीन भेजे, डराने वाले भेजे कि आदमी ठीक ठिकाने पर आ जाए।

प्रश्न 21 : *वैदिक धर्म में और सनानन धर्म में क्या अन्तर है ?*

उत्तर : यह आपने अभी तक नहीं जाना, मुझसे ही पूछेंगे ? जानते नहीं हैं क्या ?

सबसे पहला तो यह है कि वे मानते हैं कि ब्रह्म से जगत् उत्पन्न हुआ, ब्रह्म से। हम कहते हैं, ब्रह्म से तो हुआ लेकिन किस चीज़ से हुआ ? ईश्वर, जीव और प्रकृति; ब्रह्म, जीव और प्रकृति—ये तीन चीज़ें होनी चाहिएँ। अकेले ब्रह्म से नहीं। अकेले ब्रह्म से अगर आप मानेंगे तो बड़ा भारी दोष आ जाएगा, क्या दोष आ जाएगा कि ब्रह्म पवित्र है। **सत्यं ज्ञान अनन्तं ब्रह्म** सत्य है, ज्ञानी है और अनन्त है लेकिन दुनिया में बेईमानी ज़्यादा है। यह कहाँ से आ गई ? अगर अकेला ब्रह्म माना जाए तो ब्रह्म को भी ऐसा मानना पड़ेगा, खोटे सोने के खोटे ज़ेवर और अगर ख़राब कपड़े का थान लाएँ तो ख़राब कपड़े होंगे। जो चीज़ भी आप ख़राब लाएँगे, उससे जो चीज़ बनेगी, ख़राब बनेगी। इसलिए अगर ब्रह्म से ही यह सब बने हैं और यह बेईमानी दुनिया में है और यह बदमाशी है। हमें मानना पड़ेगा कि ब्रह्म में भी यही चीज़ होनी चाहिए। इस वास्ते क्या मानना है ? एक तो बड़ा फ़र्क़ यह है कि तीनों चीज़ जगत को उत्पन्न करने वाली हैं। शंकराचार्य जी महाराज ने तीन ही मानी हैं। कौन से मन्त्र से ?

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

इस मन्त्र की व्याख्या में तीन चीज़ें मानी हैं और तीन चीज़ों से ही जगत की उत्पत्ति हुई है जैसा कि मैं अपने व्याख्यान में भी कह चुका हूँ। इस वास्ते यह मानना एक बड़ा फ़र्क़ है।

दूसरा क्या है? दूसरा यह कि परमात्मा की जगह मूर्तिपूजा। दूसरी चीज़ यह है और तीसरी क्या है? तीसरी चीज़ यह है कि गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था नहीं मानना। यह मानना कि ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण होता है, क्षत्रिय का बेटा क्षत्रिय होता है, ग़लत बात है। मैंने कहा था कि डॉक्टर का बेटा डॉक्टर होता है कि नहीं तो इनकार कर दिया। डॉक्टर साहब कहीं चले गए थे। एक आदमी बीमार को लेकर गए और कहा, 'डॉक्टर साहब कहाँ गए?' उन्होंने कहा, 'मरीज को देखने गए हैं।' 'कब आएँगे?' 'पता नहीं, कितनी देर में आएँगे' तो किसी ने कहा कि 'इनके बेटे से ही नुस्ख़ा लिखवा लीजिए' तो वे कहने लगे कि, 'बेटा कोई डॉक्टर थोड़े ही है?' डॉक्टर का बेटा कोई डॉक्टर होता है? इंजीनियर का बेटा इंजीनियर होता है? नहीं न! इसलिए यह मानने के योग्य नहीं। अगर योग्यता है तो बेशक मान सकते हैं। इसलिए यह एक ग़लत चीज़ है।

फिर यह है कि मर्द विधुर हो जाने के बाद, रंडवा हो जाने के बाद शादी कर लेता है। यदि ज़रूरत समझता है। अगर कोई ऐसी सूरत हो कि कोई विधवा हो और विधवा हो जाने के बाद ऐसी आवश्यकता अनुभव करे कि गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करे तो कोई पाप की बात नहीं है। उसी के अनुकूल यह भी इन्तज़ाम हो जाना चाहिए। न होने की वजह से लाखों दूसरे के धर्म में चली गईं। ईसाई और मुसलमानों के ग़ोल बढ़ गए। फिर लोगों की समझ में आया। इस वास्ते अब वे कह रहे हैं इस तरह पर। नो कहने लगे कि एक बड़ा फ़र्क़ यह है।

और चौथी चीज़ क्या है? चौथी चीज़ यह है कि मुक्ति से पुनरावृत्ति। मुक्ति होगी और उससे लौटके आएगा। हम तो मानते हैं। वे मानते हैं, लौटकर नहीं आएगा। लेकिन उस चीज़ में इतनी बहस नहीं होती है जितनी इन चीज़ों में बहस हुआ करती है। इस वास्ते क्या होना चाहिए? इन चीज़ों को समझ लेना चाहिए कि ये नुक़्सान करने वाली हैं। हमारे समाज के वास्ते इसलिए सही चीज़ जो वेदोक्त है उसी पर चलना चाहिए। यह फ़र्क़ है। अगर यह फ़र्क़ हट जाए तो उनमें, हममें कोई झगड़ा नहीं है। इसी वजह से झगड़ा होता है। जिसे आप झगड़ा कहते हैं, मैं तो झगड़ा नहीं मानता। मैं तो मानता हूँ, ख़यालात का तबादला है। इसमें कोई बात समझ में आ जाए, आ जाए। पहले बताइए लड़कियों की तालीम मानते थे? सनातनधर्मी कहा करते थे, "क्या दफ़्तर में जाएँगी, क्या नौकरी करेंगी?" अब सनातनधर्मी ख़ूब पढ़ा रहे हैं B.A. और M.A. और कहाँ तक पढ़ाते चले जा रहे हैं। क्यों? आर्यसमाज की बात थी। मानने के योग्य थी। उस वक़्त नहीं मानी। अब मान रहे हैं। आर्यसमाज की बात गवर्नमेंट भी मान रही है। हम कहते हैं—अछूत—इसमें शक नहीं कि जिन्हें आप अछूत कहते हैं इनमें कुछ है गन्दगी की चीज़। दूर कर दें साफ़ हो जाता है। फिर उसमें क्या ख़राबी है ऐसी? गवर्नमेंट ने हमारी बात मान ली और क्या कर दिया है आज कि याद रखो अगर मेहतर से भी तुमने कहा कि तुम भंगी हो तो तुम्हें सज़ा होगी। ग़ाज़ियाबाद की एक मज़ेदार बात है, सुनाता हूँ।

ग़ाज़ियाबाद में समाज थे। वे गए, कहने लगे—जी, दूध पिलाओ। वह शीशे का गिलास उठाने लगा जो दूध वाला था। 'नहीं हम तो पीतल के गिलास में पीएँगे।' (भंगी बोला) 'अच्छा पीतल के गिलास में पीओगे' उसने एक मेहतर को आवाज़ लगा दी 'यहाँ आना, ये मांज देना ज़रा गिलास।' मेहतर को बुलाया बोले 'गिलास मांज' तो चमार

कहने लगा—मेहतर से मंजवाते हो? बोले—याद रखना कि तुझे कोतवाली ले चलूँगा मेहतर से नफ़रत करता है तू। अरे मेहतर आदमी है कि नहीं? हमारी गवर्नमेंट ने क्या कहा इसलिए मेहतर में मंजवा करके और फिर उसको दूध पिलवाया, बताया कि तुम नफ़रत करते हो। मुझसे तो यह कहने लगे कि मुझे गिलास में, इस पीतल के गिलास में दो। मैं शीशे के गिलास में दे रहा था तो मुझे एक तरह से मुजरिम गरदान रहे थे। इस बात के कहने में मैंने यह तरकीब की है। मैंने उसे बुलाया तो आप नफ़रत करने लगे कि मेहतर से मंजवा रहे हो। अरे, मेहतर भी आदमी है। बात क्या है? यह सोचने की बात है, विचार करने की बात है। हम इस पर नहीं विचार करते हैं। आपको नसीराबाद की एक बात सुनाता हूँ।

नसीराबाद में मैं व्याख्यान देने गया था। नसीराबाद अजमेर से 15-16 मील के फ़ासले पर है। वहाँ मैंने Middle का इम्तहान (दे के) पास किया था अजमेर से। व्याख्यान के लिए मैं गया हुआ था वहाँ। व्याख्यान दे चुका और लौट के आने लगा तो शटल जो जाती है, गाड़ी छोटी-सी उसमें बैठ गए। लौट के आने वाली थी तो उसमें एक मेहतर भी आया था अपने बाल-बच्चों समेत। तो कोई मारवाड़ी सज्जन बैठे हुए थे गाड़ी में, बोले—आय-आय-आय-आय मेहतर गाड़ी में, गाड़ी में मेहतर। वह बोला—महाराज, टिकिट है, टिकिट है। ऐसे करते-करते वहाँ बैठ ही गया। बैठ गया तो इनको बुरा लगा। ये गए। किनके पास? गार्ड के पास। "गार्ड साहब, गार्ड साहब, गाड़ी के अन्दर मेहतर आ गया है।" गार्ड साहब बड़े मसख़रे थे, बोले, "आदमी है, घोड़ा है, गधा है, कौन है?" बोले, "घोड़ा, गधा तो नहीं है साब, आदमी है।" "आदमी है तो फिर क्या बात है?" "मेहतर टट्टी उठाते हैं।" "तुम्हारी टट्टी किसी ने उठाई थी कि नहीं? कि जब छोटे थे तब माँ-बाप ने उठाई थी तो जाओ माँ-बाप समझो और गाड़ी

में बैठ जाओ चुपचाप।''—माँ-बाप समझो और बैठो वहाँ जाकर—जब लाला जी लौट आए तो मैंने पूछा कि क्या रिश्ता लेकर आए हैं आप मेहतर के साथ? तो बोले कि 'म्हारो बेटा यूँ बोल्यो कि माँ-बाप समझो और बैठ जाओ। बोले, इसमें यह कहता है वह देखिए। यह इस तरह की बातें हैं, जो बेवकूफ़ी हम लोगों ने की है उसका फल भोग रहे हैं। आज गवर्नमेंट के द्वारा यह जूता तैयार किया गया है इस बात का कि जो ख़ामख़्वां नफ़रत करते हैं इन्सान से—स्वामी जी क्या कहते हैं कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिए। बस, यह जो हमारा हाथ है, हम शौच जाते हैं तब इस हाथ से पाख़ाना साफ़ करते हैं कि नहीं करते हैं? लेकिन इस हाथ को कटवा दिया क्या हमने? हम तो देखते हैं कि जब कभी कोई पानी की चीज़ तैयार होती है कहीं शर्बत तैयार हो रहा है कहीं ज़ायक़ा (ज़ायक़े की चीज़) तैयार हो रहा है तो दोनों हाथ से काम किया जाता है। क्या इस हाथ को अलग फेंक दिया जाता है? नहीं न। यह कैसी चीज़ है? जब सफ़ाई ही गई, तो हो गई। फिर इसमें झंझट ही क्या है? और बहुत आदमी तो बहुत ही कम देर में साफ़ कर देते हैं, ज़्यादा नहीं और लोग तो ज़्यादा-ज़्यादा देर लगाते हैं। चलिए आगे—

मंत्री जी—अब पर्चियाँ भेजने की कृपा न करें। काफी आ चुकी हैं। रात के ग्यारह बज जाएँगे।

देहलवी जी—जितना वक़्त है उतने तो बोल लीजिए। कोई हर्ज नहीं, चलिए, चलने तो दो। क्या हर्ज है अरे-भई क्यों उसमें गड़बड़ कर रहे हो, बोलने दीजिए।

प्रश्न 22 : *मनुष्य जो कुछ करता है वह अपने स्वभावानुकूल करता है?* (प्रश्न आगे अस्पष्ट टेप रिकार्ड हुआ है।)

उत्तर : हरएक आदमी के सामने प्रमाण मौजूद है। चाहे किसी चीज़ को, अच्छी को चुन ले चाहे बुरी को चुन ले। यह इसके अन्दर

Discrimination की शक्ति है, इम्तियाज़ की शक्ति है इसलिए यह कहना कि परिस्थिति का दास है, यह ग़लत चीज़ है। इसने बहुत बना लिया परन्तु परिस्थिति से ऊपर चलने वाले आदमी मौजूद हैं। इसलिए आगे वह परिस्थिति को दबा सकता है। परिस्थिति क्या है? क्या चीज़ है बाहर? यहाँ परिस्थिति ऐसी है जिसकी वजह से वह काम नहीं कर सकता है। हो सकता है बराबर और नहीं कर सकता है। किसी स्थान में तो उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है तो आप बतलाते हैं (पूछते हैं) कि जीवात्मा साधन है। काहे का साधन है?

साधन है तो साध्य कौन हैं? आखिर साधन का इस्तेमाल करने वाला कौन है? ये साधन लकड़ी मेरे पास है तो मेरे पास यह लकड़ी है। यह साधन है किस बात का? सहारे के लिए मेरे सहारे के लिए न? किसका साधन है यह? नहीं लिखा उन्होंने। सोचना चाहिए इसलिए आदमी साधन है यह ग़लत चीज़ है। यह कह सकते हैं कि आदमी अगर कोशिश करे इस बात की कि तरक़्क़ी करे और परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करे तो कहते हैं, क्या है जो साधन है कि जिससे ईश्वरीय गुणों को प्राप्त करता है। ये साधन हैं और ये साधक हैं और परमात्मा साध्य है। कल मैंने बतलाया था ख़ादिम मख़दूम और ख़िदमत का सामान। चलिए—

प्रश्न 23 : *जब इन्सान अपने पापों का प्रायश्चित्त इन्सानी जिस्म में भी कर सकता है तो इन्सानी योनि में आने के बाद फिर हैवानी योनि में जाने की ज़रूरत नहीं—यह उन्होंने कहा* है। (प्रश्न दुबारा से देहलवी जी ने बोला क्योंकि प्रश्न पढ़ने वाले सज्जन की आवाज़ लोगों ने सुनी नहीं)

उत्तर : प्रायश्चित्त करने का मतलब क्या हुआ? यह हुआ कि प्रायश्चित्त, यानि चित्त को उन्होंने पाप से हटाकर पुण्य की ओर लगाया। यह प्रायश्चित्त का अर्थ हुआ। लेकिन जो पाप कर लिया है वह तो भोगना पड़ेगा। अगर फ़र्ज़ कीजिए आप किसी के मुँह पर

थप्पड़ मारें या लकड़ी मारें या कहीं आग लगा दें और कुछ करें और फिर यह कहें कि साहब, मैं प्रायश्चित्त कर रहा हूँ। उनका प्रायश्चित्त का क्या मतलब है कि आगे ऐसा कभी नहीं करूँगा। जो पाप मैंने किया है। तो कहते हैं कि यह जो पाप आपने किया है, नुक़्सान हुआ है पब्लिक का लिहाज़ा आपको देना पड़ेगा Make good करना पड़ेगा। हो नहीं सकता कि आपको छोड़ दिया जाए। इसलिए जिसका यह ख़याल है, वह ख़याल ग़लत है। बिलकुल उसको करना पड़ेगा। इसलिए प्रायश्चित्त से पाप दूर नहीं हुआ करते। प्रायश्चित्त से सिर्फ़ चित्त ही एक ठिकाने लगा करता है यानि मैं आगे नहीं करूँगा, ऐसा बस। लेकिन जो किया हुआ है वह भोगना पड़ेगा। जो लड़का फ़ेल हो गया है, पास नहीं हुआ है, वह कहे कि आगे मैं कोशिश करूँगा आगे मैं कभी प्रमाद नहीं करूँगा। सालभर यूँही नहीं फिरता फिरूँगा। खेल-कूद में नहीं ग़ुमाऊँगा। ऐसा जो कह रहा है वह प्रायश्चित्त कर रहा है लेकिन जो फ़ेल हो गया है वह तो भोगना ही पड़ेगा उसको, वह पास नहीं हो जाएगा। ऐसा कहने से वह पास नहीं हो जाएगा। पास तो दुबारा ही इम्तिहान दे और सही तौर पर दे तभी हो सकता है।

प्रश्न 24 : *अगर हर काम ईश्वर के हुक्म से होता है तो इन्सान गुनाह क्यों करता है ?*

उत्तर : बिल्कुल नहीं, तमाम काम ईश्वर की मर्जी से होते हैं, यह ग़लत बात है। इसके मायना निकले कि आप ईश्वर के औज़ार हैं। जब औज़ार हैं तो औज़ार को कभी सज़ा नहीं हुआ करती। कोई आदमी छुरे से किसी का पेट फाड़ दे और छुरी को लेके थानेदार के पास दे दे और कहे कि 'लो साहब, इसने मारा है' और आप घर भाग जाएँ। आप घर भाग जाएँ, कहने लगें कि 'इसने काटा है।' क्या थानेदार वहीं बैठा रहेगा। भेजेगा, पकड़ के लाओ बदमाश को। साधन को सज़ा नहीं मिला करती है। सज़ा मिला करती है साधक को जिसने इस्तेमाल

किया है। इस वास्ते यह ग़लत चीज़ है जो लोगों ने कहा है। यह मानने के क़ाबिल बात नहीं है।

प्रश्न 25 : *जब परमात्मा हर जगह है तो मन्दिर क्यों बनवाए गए?*

उत्तर : उन्होंने बनाए जिन्हें परमात्मा को एक जगह क़ैद करना था। उन्होंने बना लिये। मैं कल व्याख्यान में यह बता चुका हूँ।

प्रश्न 26 : *आपने जो कल कहा था कि आदमी या जीव परमात्मा की ओर से नहीं मरते, वैसे अपनी शक्ति आदि समाप्त करके मर जाते हैं। जो आदमी कट करके मर जाए तो वह परमात्मा की ओर में नहीं मरा?*

उत्तर : मैंने जो कहा था वह यह बात ही नहीं थी। इसलिए उन्होंने ग़लत समझा। मैंने यह कहा कि 'भगवान् की तरफ़ से जो प्रारब्ध मुकर्रिर होती है वह प्रारब्ध भोग कर इन्सान जिस्म को छोड़ देता है। ईश्वर के इन्तज़ाम से ही छोड़ता है। अगर एक आदमी रेल में बैठा हुआ है, टिकिट लेके गया है और जहाँ उसका सफ़र समाप्त हुआ, वहाँ वह उतर जाता है। क्या यह रेलवे के इन्तज़ामं के विरुद्ध है? यह तो इन्तज़ाम के मुआफ़िक़ है। अगर ज़्यादा देर बैठा रहेगा तो पूछा जाएगा, "कैसे बैठे हुए हैं आप? आपका टिकिट कहाँ का है? उतर जाइए आप। कैसे बैठे हैं आप?" तो वह उतर रहा है इन्तज़ाम के मातहत। You are travelling without ticket यह कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती है।

तो जो भोग मुक़र्रिर हुए हैं उन भोगों को भोगने के बाद परमात्मा के इन्तज़ाम से ही वह शरीर से निकलता है। इसको कभी न भूल जाइए कि ईश्वर का इन्तज़ाम नहीं है। परमात्मा की व्यवस्था का शब्द है दूसरे समुल्लास में कि परमात्मा की व्यवस्था से ही जीवात्मा शरीर से निकल कर अन्य स्थानों पर जाता है जहाँ उसके कर्म ले जाते हैं यानि कर्म के

लायक़ जो जगह है, वहाँ परमात्मा उसे भेजता है।

प्रश्न 27 : *स्पष्ट समझ में नहीं आता।*

उत्तर : यानि जिन लोगों ने अपनी योनियों जहाँ वे मनुष्य योनि में हैं और बुद्धि की वर्ज़िश की हरएक काम को बुद्धि की कसौटी पर जाँचा है तो बुद्धि की वर्ज़िश हो गई, अच्छी बुद्धि तीव्र हो गई है, तेज़ हो गई है। कहते हैं, जब ऐसे पैदा होंगे दूसरी जगह तो वह तीव्र बुद्धि ले के आएँगे। इसलिए उनका यह कहना कि बच्चे तीव्र बुद्धि होते हैं वे इस कारण से होते हैं और जिनकी तीन बुद्धि नहीं थी बचपन में। पता लगा कि इन चीज़ों के इस्तेमाल से बुद्धि तीव्र होती है तो उन्होंने साधन भी पूछे हैं कि क्या हैं? वह ये हैं कि जो काम करो, बुद्धि से समझ के करो तो बुद्धि की वर्ज़िश होगी तो जवानी की हालत में भी बुद्धि तेज़ हो जाएगी और खाना भी वह खाओ जो बुद्धि का नाशक न हो, बुद्धि का पोषक हो। तो क्या कहा करते हैं कि जैसा खाए अन्न वैसा बने मन और जैसी रखे शुद्धि वैसी होवे बुद्धि। इसलिए मनुष्य को शुद्धि रखनी चाहिए हर प्रकार की। उसे रखने से बुद्धि शुद्ध होगी और बुद्धि तीव्र होगी। कैसे? उसके लिए साधन भी लिखे हैं। क्या-क्या चीज़ खानी चाहिए? कौन-सी बटी है? वह खाएँगे। उनको आप पीसिए और खाइए। स्वामी जी महाराज ने इसमें लिखा है जिसे पं०लेखराम जी ने अपने जीवन-चरित्र में पीछे अन्तिम पृष्ठों में लिखा हुआ है। वैद्यों से आप पूछें। ऐसी ओषधियाँ हैं कि जिनके प्रयोग से बुद्धि तीव्र होती है। ऐसा आप इस्तेमाल करें। बुद्धि का वर्ज़िश हो हर काम में और साथ ही यह भी होना चाहिए कि जो ओषधि हो उसका भी सेवन करें, तीव्र हो जाएगी।

प्रश्न 28 : *दूध रक्त से बनता है या रस से?*

उत्तर : ग़लत बात है दूध रक्त से बने तो गाढ़ा हो जाए या तो चीज़ गाढ़ा होके बनती है या पतला होके बनती है। जब आदमी भोजन

करता है तो भोजन करके रक्त बनता है। पतला बना न और पतला बनके फिर क्या बना और गाढ़ा बना। उसके बाद कुछ और बना तो कहते हैं गाढ़ा बन रहा है। गाढ़ा बनके बन रहा है। तो अगर ख़ून से दूध बने तो ख़ून से दूध गाढ़ा होना चाहिए। लेकिन गाढ़ा नहीं होता। इसलिए रस से दूध बनता है। सबसे पहले भोजन का रस उसके बाद दूध—इस तरह होता चला जाता है। इसलिए उस अपेक्षा से ही यह बात ग़लत है कि ख़ून से दूध बनता है, ग़लत चीज़ है वह नहीं बनता, उससे ही बनता है।

प्रश्न 29 : *गांधी जी को महात्मा क्यों कहते हैं, जबकि वे मांस खाते थे?*

उत्तर : अगर खाते थे तो मैं तो अब भी नहीं कहता हूँ उनको महात्मा। मैं नहीं कहता हूँ। माफ़ कीजिए। मेरा अपना ख़याल अलग है? मैं तो सिर्फ़ *गाँधी जी* कहता हूँ, *महात्मा* मैं नहीं कहता। मेरे पास इसके दलायल हैं जिन्हें मैं यहाँ नहीं कहना चाहता। मेरे पास बहुत–से प्रमाण हैं जिन्हें मैं नहीं कहना चाहता क्योंकि ख़ामख़ां वह गुज़र गए हैं, मैं अब यह बात कहूँ, उसका कुछ फ़ायदा नहीं। इतना कह सकता हूँ कि जो Spiritual Experiment आध्यात्मिक परीक्षण जिस तरह वह किया करते थे उसके मैं सख़्त खिलाफ़ हूँ और वह आचार पर बहुत बड़ा धब्बा है। इसलिए मैं तो जब ज़बान से कहता हूँ, *गाँधी जी* कहता हूँ, *महात्मा गाँधी* कहता ही नहीं। *महातमा* कह सकता हूँ, *महात्मा* नहीं कह सकता।

प्रश्न 30 : *यदि आप विष्णु जी विष्णु जी यह शब्द कहने में ऐसा समझते हैं तो आप कैसे कह सकते हैं कि भगवान् उसका.... जबकि भगवान सबके दिलों से वाकिफ हैं?*

उत्तर : समझ गया। भाई! यह तो बच्चे वाली बात थी जो मैंने कहा था कि मैं बच्चा था और ठहरा हुआ था वहाँ और वहाँ हमारे जो

मौसा साहब थे वे विष्णु नाम विष्णु नाम बोल रहे थे और जल्दी-जल्दी बोल रहे थे। तब मैंने कहा कि मैं तो समझा ही नहीं कि क्या है। मैं तो समझा कि....

परमात्मा यह भी जानते हैं कि इसने उच्चारण भ्रष्ट किया हुआ है। अच्छा नहीं किया हुआ। विष्णु नाम ले रहा है लेकिन विष्णु का अर्थ भी जानता है कि नहीं जानता। केवल नाम जप रहा है तब तो उसका कोई लाभ नहीं। नाम का अर्थ जानने वाला है तो बेशक इतना जानने वाला है। इसलिए वह तो बच्चेपन की बात थी। उसको यहाँ लाने की कि भाई हम यह तय करना चाहते हैं, निश्चय करना चाहते हैं कि भगवान् उसके दिल के हाल से वाक़िफ़ है या नहीं। दिल के हाल से तो वाक़िफ़ है ज़रूर। बल्कि गूँगा आदमी न भी बोले तो भी अगर उसके गुणों का ध्यान करे और विचार करे तो भगवान् उसके दिल से भी वाक़िफ़ है और उसको भी वह फल जो उस अवस्था में देना चाहिए, वह देता है।

प्रश्न 31 : *योगीराज कृष्ण को* योगीराज *कहने से क्या मुराद है?*

उत्तर : उन्होंने योगसाधन किया हुआ था। योगी थे। यह मुराद है और क्या है? योग के माने ताल्लुक़ के हैं, सम्बन्ध के हैं। परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना, यही तो योग है। तो आत्मा का परमात्मा से मिलना योग है। इसलिए उन्होंने ऐसा किया। वे योगी थे ही। इसलिए कहने में कोई पाप थोड़े ही है। **योगः कर्मसु कौशलं** उन्होंने गीता में लिखा है कि योग क्या है कि कर्म में कौशल, कर्म में कौशल क्या? हर काम में efficiency, efficiency in work यह इसका अर्थ हुआ। **योगः कर्मसु कौशलं** कर्मों में कौशल जो है, यह क्या है? यही योग है यह वहाँ उन्होंने ख़ुद कह दिया जिसका अंग्रेज़ी में मैंने तर्जुमा कर दिया कि जो काम आप करें उसमें efficiency होनी चाहिए। efficiency अगर है तो कर्म में कौशल होने से योगी हो गए उस काम पर। आज

कौशल नहीं है। आज जितने भी आफ़िस में काम करते हैं, वहाँ से efficiency और responsibility दोनों चली गई हैं। ज़िम्मेदारी भी नहीं है और कौशल भी नहीं है।

प्रश्न 32 : *क्या केवल जप करने का कोई लाभ है ?*

उत्तर : नहीं, बिल्कुल नहीं। श्रद्धापूर्वक जप करे और तदनुकूल आचरण करे तभी कोई लाभ है, वैसे नहीं।

●●

पं० रामचन्द्र देहलवी

पण्डित जी का जन्म नीमच छावनी (मध्य प्रदेश) में रामनवमी के दिन सन् 1881 में मुंशी छोटेलाल जी के घर हुआ था। मुंशी जी उर्दू-फ़ारसी के जाने-माने विद्वान् थे। पण्डित जी की माता श्रीमती रामदेवी जी मालवा के किसी भील ग्राम में जन्मी एक वीरांगना निडर महिला थीं।

रामनवमी के दिन जन्म होने के कारण ही आपका नाम रामचन्द्र रखा गया। पण्डित जी कुशाग्र बुद्धि बालक थे। छोटी आयु में ही आपने आर्यसमाज के सत्संगों में उपदेश-व्याख्यान सुन-सुन कर वेद का एकेश्वरवाद का सिद्धान्त दृढ़तापूर्वक अपना लिया था।

बाल्यकाल में जो संस्कार पड़े वह मृत्युपर्यन्त उनके साथ रहे। देहलवी जी के तप, त्याग, सरलता व जीवन के प्रेरक प्रसंग आर्य-जनता का सदैव पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे।

पण्डित जी को अक्तूबर 1967 में ज्वार हो गया और वे निर्बल हो गए तथा 2 फरवरी सन् 1968 को पण्डित जी ने नश्वर देह का परित्याग कर दिया। आपकी विदाई से एक सुवर्णिम युग समाप्त हो गया।

तेरे जीवन से जाति को जीवन मिला,
तेरे श्वासों से जीवन की शोभा बढ़ी।